



प्रेस विबृति

०९ फेब्रुअरी, २०२३

विश्वभारती आज प्राय समस्त आलोचनार केन्द्रबिन्दु। कारण याइ होक ना केन। निन्दुकदेर मते विश्वभारतीर वर्तमान प्रशासनेर किछु बलिष्ठ पदक्षेपेर जन्य बाङ्गलीर आवेग आज आघातप्राप्त। एटा घटना बाङ्गलीर आवेग छिल बलेहि बिनय-बादल-दीमेश एवं आरও प्रातःस्मारणीय स्वाधीनता संग्रामी फाँसिकाट्टे उठते कथनहि द्विधा बोध करेननि। ताँराओ निन्दित हयेछेन कारण ताँदेर भाबनाचिन्ता कदर ना करार बाङ्गलीও छिल। एटा स्वाभाविक कारण स्वयं गुरुदेब रवीन्द्रनाथ ठाकुर आमादेर स्मारण करिये दियेछेन ये “बस्तुत निन्दा ना थाकिले पृथिबीते जीबनेर गोरब कि थाकित? . . . किछु भाल काज करिलाम . . . यदि कोन लोक ताँहार मध्ये गृह मन्द अभिप्राय ना देखिल, तबे साधुता ये, नितान्तहि सहज हइया पडिला!” अर्थां निन्दामन्द मानुषेर, बिशेषतः बाङ्गलीर चरित्रेर एकटा मूल बैशिष्ट्य। गुरुदेबও ताइ भाबतेन। ताँर रचना ‘चारित्रपूजा’ते आरो परिक्षार करे ताइ बलेन ये एই मानसिकतार फले आमरा “याहा अनुष्ठान करि, ताहा बिश्वास करिना, याहा बिश्वास करि, ताहा पालन करि ना। भुरिपरिमान बाक्यरचना करिते पारि, तिल परिमान आत्मत्याग करिते पारि ना। . . . आमरा सकल काजेहि परेर प्रत्याशा करि, अथচ परेर त्रुटि लहिया आकाश बिदीर्ण करिया थाकि!” एই बस्तुव्येर पुनरावृति देखि सजनीकान्त दासेर “कर्मी रवीन्द्रनाथ” ग्रन्थे येखाने कवि बलेन ये, “बाङ्गलीर युद्ध बाइरेर कोन शक्त्रर सঙ्गे नय, परम्पर, निजेर सঙ्गे, परके उपलक्ष करे ब्यक्तिगत स्वार्थ बजाय राखार जन्य एरा अविरत शान दिच्छे छुरिते; से छुरिओ कोन धातुर नय, -- कुৎसा एवं कादा दिये तैरी तार अस्त्रा!” परबर्तीकाले तिनि आरও विस्तारित बिबरण दियेछिलेन ताँर कष्टेर या ताँके विश्वभारतीके पठन-पाठनेर स्थान करार जन्य भोग करते हयेछिल। एই समस्त कष्टेर मूल कारण छिल ताँरा यारा विश्वभारतीर बदान्यताय जीवनधारण करतेन। कविपुत्र रथीन्द्रनाथ ठाकुरेर आञ्जीबनीर (On the Edges of Time) प्रति पाताय या बिबरण पाइ ता गुरुदेबेर बिश्वेषणेर थेके खुब बेशी तफां नेइ।

उपरेर बस्तुव्य प्रस्तावनाय मूल उद्देश्य एकटाइ: आज या घटछे विश्वभारतीके केन्द्र करे ता नूतन नय। विश्वभारतीर श्रष्टाकेओ भुगते हयेछिल। हयतबा प्रकृतिटा

পাল্টেছে। কিন্তু মূল ধারা অনেকটা তেমনই রয়ে গিয়েছে। তার কয়েকটা দিক আজকের প্রেস বিবৃতিতে আমরা উল্লেখ করব:-

(১) বিশ্বভারতীকে যদি কেউ আখ্যা দেন যে এটা অনেকাংশে ভ্রষ্টাচারের আঁতুড়ঘর – তাহলে হয়তবা খুব ভুল বলা হবে না। এই বিশ্বভারতী থেকে গুরুদেবের পাওয়া নোবেল চুরি হয়। এই বিশ্ববিদ্যালয়ে নিয়োগ নিয়ে ভুরিভুরি অভিযোগ আছে। একজন দ্বাদশ শ্রেণী উত্তীর্ণ বিশ্ববিদ্যালয়ে চাকরী পান এবং পাঁচ বছর স্নাতক এবং স্নাতকোত্তর ছাত্র-ছাত্রীদের পড়ান। অর্থাৎ এ পাঁচ বছর ছাত্র-ছাত্রীদের যে ক্ষতিসাধন হল তার কৈফিয়ৎ তো কেউ দাবী করেন নি। পরবর্তীকালে ৫৮ জনের নিয়োগ দুর্নীতি নিয়ে একটা হাইপাওয়ার কমিটি নিযুক্ত হয়। যার ফয়সালা এখনও হয়নি। অথচ ঐ সমস্ত অন্যায় ভাবে নিযুক্ত চাকুরীজীবিরা আজও কাজ করে চলেছেন। কই এব্যাপারে বাঙালীর আবেগ তো দেখিনা। এক প্রাক্তন উপাচার্যের বিরুদ্ধে CBI অনুসন্ধান চলছে। অথচ বর্তমান পশ্চিমবঙ্গ সরকার একজন আপাতদৃষ্টিতে দুর্নীতি পরায়ণ উপাচার্যকে সম্মানের আসনে বসাতে দ্বিধাবোধ করেন না। হয়তবা কোন রাজনৈতিক উদ্দেশ্য সাধনের জন্য। আরেকজন অস্থায়ী উপাচার্যকে বিশ্বভারতী থেকে বিশেষ অপরাধের জন্য বরখাস্ত করা হয়। যেহেতু আদালতে বিচারাধীন -- তাই এব্যাপারে আমরা কোনো মতামত দেওয়া সমীচীন মনে করছি না।

(২) বিশ্বভারতী বিখ্যাত অর্থনৈতিক দুর্নীতির জন্য। এখানে LTC (Leave Travel Concession) নিয়ে যা দুর্নীতি হত – তার উদাহরণ আছে ভুরিভুরি। বিশ্বভারতী LTC এবং অন্যায়ভাবে প্রদত্ত বিলের পয়সা বাবদ চার কোটি টাকার বেশী উদ্ধার করেছে গত তিনি বছরে। অন্যায়ভাবে Grade Pay নেওয়া হত। তা বন্ধ করার ফলে অনেকে স্বাভাবিকভাবে ক্ষুরু। কিন্তু একটা দুর্নীতি বন্ধ করা হয়েছে।

বিশ্বভারতীর প্রায় সবাই এমন কি ছোটখাটো চিকিৎসার জন্য রাজ্যের বাইরে যেতেন। তার মানে এই রাজ্য চিকিৎসার মান এতই খারাপ যে তাতে আমাদের বিশ্বাস নেই। আসলে তা নয়। এটা Medical Tourism। চিকিৎসার নাম করে অনেক ক্ষেত্রেই বিশ্বভারতীর অনেক কর্মচারী অন্যান্য স্থানে ভ্রমন করতে চিকিৎসার বাহানা নিতেন। যা এখন বন্ধ হয়েছে। অর্থাৎ করদাতাদের বদান্যতায় চলা বিশ্বভারতীতে আর্থিক সাশ্রয় হয়েছে। এখানে খুব স্বাভাবিক ভাবে বিদ্যুৎ দয়নের ফলে একটা দুর্নীতির উৎস বন্ধ করা হয়েছে। বিশ্বভারতীর হাসপাতালের দুর্নীতির প্রসঙ্গে নাই বা বললাম। পরে কোন প্রেসবিবৃতিতে বিস্তারিত জানাব।

(৩) জমি-কেলেক্ষনারীর জন্য আজ বিশ্বভারতী সংবাদপত্রে এবং অন্যান্য মিডিয়ার কেন্দ্রবিন্দু। বেশ কিছু বিখ্যাত বাঙালী বিশ্বভারতীর জমি কজা করেছেন। যা বলার জন্য স্বয়ং মুখ্যমন্ত্রী

উদ্বিগ্ন হয়ে বোলপুরে এলেন। এবং প্রমাণ করার নিষ্ফল চেষ্টা করলেন যে বিশ্বভারতীর তথ্য ভুল। কাগজ দেখালেন। কিভাবে কাগজ তৈরী হয় তা নাইবা আলোচনা করলাম। তবে মাননীয়া কখনও যে তাঁর বক্তব্যের স্বপক্ষে জমি জরিপের কথা একেবারেই উল্লেখ করলেন না, কারণটা স্বাভাবিক। জমি জরিপ করলেই সঠিক ভাবে বোঝা যাবে। বিশ্বভারতীর নথিপত্র ভুল বা রাজসরকারের দাবী সঠিক। অতএব ঐ পথে যাবার কথা একেবারেই উল্লেখ করলেন না। আমরা দৃঢ়ভাবে সবাইকে জানাতে চাই যে বিশ্বভারতীর জমি অনেকেই হরপ করেছেন। আমরা কেন্দ্রীয় সরকারের আদেশ এবং CAG আদেশ মোতাবেক বিশ্বভারতীর জমি উদ্ধার করতে দায়বদ্ধ। “বিদ্যুৎদয়ন” ইত্যাদি বিশ্লেষণের মাধ্যমে এই প্রচেষ্টা থেকে বিশ্বভারতীকে বিরত করা যাবে না।

(4) বিশ্বভারতীর শিক্ষার মান নামছে। খুব স্বাভাবিক কারণ পঠনপাঠন এবং গবেষণায় আমরা অনেক পিছিয়ে। এখানে প্রশাসনের কি দায়িত্ব তা জানা নেই। শিক্ষকরা যদি আন্তর্জাতিক মান অনুযায়ী গবেষণাপত্র না ছাপাতে পারেন সেখানে প্রশাসন কি করবে। এখানে শিক্ষকদের ক্লাস নেবার জন্য এবং কর্মচারীদের তাদের সঠিক সময়ে অফিসে আসার জন্য উপাচার্যকে চৌকিদারের কাজ করতে হয়। জানিনা, বিশ্বের অন্যান্য বিশ্ববিদ্যালয়ে উপাচার্যদের এই কাজ করতে হয় কি না? শিক্ষক সাসপেনশনের কথা খুব উল্লিখিত হচ্ছে। কজন সাসপেনশন হয়েছেন? কেন প্রশাসন এধরণের পদক্ষেপ নিয়েছেন - তা জানার কি প্রয়োজন নেই? দায়িত্বজ্ঞানহীন পর্যালোচনা করে কাউকে ছোট করা যায়। কিন্তু প্রতিষ্ঠান কে অবনমন থেকে বাঁচানো যায় কি? সদ্য মাননীয়া যা করলেন তা আমাদের চোখ খুলে দিয়েছে। একজন ব্যক্তিকে বাঁচাবার জন্য একটা বিশ্ববিদ্যালয় প্রতিষ্ঠানকে ছোট করার প্রবণতা আর যাই হোক সমালোচনার উর্দ্ধে নয়। এই সেই প্রতিষ্ঠান যা কি না সর্বশ্রেষ্ঠ বাঙালী, গুরুদেব রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর প্রতিষ্ঠিত। এই ধরণের পদক্ষেপ নেবার পিছনে হয়তবা কোন রাজনৈতিক উদ্দেশ্য আছে। কিন্তু যাই হোক, কারো সাদা চোখে এটা ধরা পড়ল না যে বিশ্বভারতী অনেক বড় এবং আমাদের সভ্যতার অঙ্গ। ব্যাক্তি আজ আছে, কাল নেই। কিন্তু প্রতিষ্ঠান থাকবে। সেই বাস্তব সত্যটা জানানোর জন্য প্রয়োজন সেই শিশুকে যে বলবে - “রাজা ন্যাংটা”। আমরা সেই অপেক্ষায় থাকলাম।

Mahua Banerjee
Mahua Banerjee
9.2.2023

Mahua Banerjee

In-Charge	প্রभারী / In-charge
Public Relations	জনসংমর্ক / Public Relations
Visva-Bharati	বিশ্বভারতী / Visva-Bharati